(1)

# राजस्थान विधान सभा की कार्यवाही का वृत्तान्त

अंक 8 ] सप्तम् विधान सभा के आठवें सत्र का 19वां दिवस [ संख्या 13



शुक्रवार,
दिनांक 23 मार्च, 1984

विधान सभा की बैठक म. पू 11.00 बजे विधान सभा भवन; जयपुर में प्रारम्भ हुई।

(श्री पूनमचन्द विश्नोई, अध्यक्ष, पदासीन)

**श्री अध्यक्ष** : शोकाभिव्यक्ति।

**शोकाभिव्यक्ति एवं श्रद्धांजलि**

**श्री शिवचरण माथुर (मुख्य मन्त्री)** : अध्यक्ष महोदय, अजीब विडम्बना है कि इस सत्र में हमको इस तरह के प्रसंग में चौथी बार शोकाभिव्यक्ति करनी पड रही है।

आज प्रातः इस सदन के एक बहुत महत्वपूर्ण सदस्य, स्वतन्त्रता सेनानी, हमारे बुजुर्ग, आदरणीय शोभाराम जी साहब का निधन हो गया। अध्यक्ष महोदय, ऐसा लगता है कि वह पीढ़ी, जिसने देश की आजादी के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करके हमारे मुल्क को बहुत कुछ दिया धीरे-धीरे समाप्त होती जा रही है। शोभाराम जी उस पीढ़ी के अन्तिम व्यक्तियों में से एक रहे हैं। मुझे एक लम्बे समय तक अलग-अलग अवसरों पर उनके साथ काम करने का मौका मिला है। आजादी की लड़ाई में शोभाराम जी का अलवर के रियासती आन्दोलन में जागीरी जुल्मों के खिलाफ संघर्ष का जो महत्वपूर्ण योगदान रहा, उसको राजस्थान ही नहीं, सारा देश जानता है। एक साधारण परिवार में पैदा होकर उन्होंने संघर्ष का जीवन अपनाया और वे जीवन-पर्यन्त संघर्षरत रहे, यहां तक कि उन्होंने मृत्यु से भी संघर्ष करने की ठानी। 1942 के आन्दोलन में शोभाराम जी की महत्वपूर्ण भूमिका रही। जब आजादी आयी, देशी रियासतों का पुनर्गठन होकर अलग-अलग दौर में कुछ यूनियन्स का निर्माण किया गया उस समय शोभारामजी को मत्स्य यूनियन का मुख्य मन्त्री बनाया गया। उनमें अलवर रियासत, करौली रियासत; धौलपुर या भरतपुर रियासत शामिल थीं। मैं समझता हूं कि राजस्थान

(श्री शिवचरण माथुर)

के एकीकरण की जो प्रक्रिया प्रारम्भ हुई वह सबसे पहली प्रक्रिया मत्स्य यूनियन के निर्माण से प्रारम्भ हुई थी और वे उसके पहले मुख्य मन्त्री थे। उन्होंने बहुत थोड़े समय में उस प्रक्रिया के माध्यम से जनता की आकांक्षा को पूरा करने की दृष्टि से बहुत से सुधार किये, बहुत से रिफार्म्स किये। जब एक के बाद एक बड़े राजस्थान की प्रक्रिया बननी शुरू हुई तो अपनी यूनियन को समाहित करके एक बड़े और समृद्ध राजस्थान की कल्पना में वे लग गये।

शोभाराम जी अलग अलग समय पर राजस्थान के मन्त्री रहे। जिस विभाग को उन्होंने संभाला, हमेशा प्रगतिशील, समाजवादी विचारधारा के आधार पर उसे कुछ नई दिशा देने की उन्होंने चेष्टा की। सहकारिता विभाग को लोग आज भी याद करते हैं, जो मौलिक परिवर्तन उनके समय में सहकारिता आन्दोलन में उन्होंने किया वह प्रशंसा का विषय रहा है।

जैसा, अध्यक्ष महोदय, मैंने आपसे निवेदन किया, उन्होंने हमेशा एक संघर्ष का जीवन बिताया। उन्होंने कभी किसी के सामने झुकना नहीं जाना। जहां भी कहीं चुनौती के सवाल आते थे वे खास तौर से सिद्धान्तों और मूल्यों पर दृढ़ रहते थे, अडिग रहते थे। चाहे कितनी ही शक्ति सामने हो उसके सामने उन्होंने कभी झुकना नहीं सीखा।

पिछले दिनों, काफी अर्से से वे बीमार चले आ रहे थे। मैं जब-जब भी उनसे मिलने गया, पिछली बार भी जब उन्हें हार्ट अटैक हुआ तब भी मैंने उनसे निवेदन किया, बाबू जी, आपको आराम करना चाहिए, आप बहुत ज्यादा चिन्तित रहते हैं, बहुत ज्यादा बोलते हैं, डॉक्टर्स ने बोलने के लिए मना किया है तो वे एक लम्बा भाषण मुझे दे देते थे, डॉक्टर्स तो इस प्रकार की फिजूल की बातें करते ही रहते हैं, हम लोग बगैर बोले कैसे रह सकते हैं। चार-पांच दिन पहले मैं उनसे मिलने गया तो भी वे डॉक्टर के मना करने के बावजूद निरन्तर बैठ जाते थे और बातें करने की चेष्टा करते थे। कल ही मैंने डॉक्टर से उनके स्वास्थ्य के बारे में पूछताछ की थी, उनको हृदय का यह दौरा छठा या सातवां हुआ था। लेकिन कल वे ठीक थे। दिन में काफी अच्छा रिवाइवल उनका होगया था। लेकिन रात को अचानक 10/10.30 बजे स्ट्रोक हुआ उससे फिर रिवाइवल की काफी कोशिश की गई लेकिन करीब एक बजे के आस-पास उनका निधन हो गया।

अध्यक्ष महोदय, वैसे तो यह नियति का नियम है, सबको इस स्थिति का सामना करना पड़ेगा, लेकिन कुछ लोग हमारे बीच से उठ जाते हैं या चले जाते हैं तो एक ऐसा वैक्यूम अनुभव होता है और ऐसा लगता है कि इसकी पूर्ति करना असम्भव है। आजादी के लिए लड़ने वाली पीढ़ी के मूल्य, उसके सिद्धान्त अपने ढंग के थे। मैं मानता हूं कि जहां आजादी के लिए वे संघर्षरत रहे वहां उसके बाद में इस देश के निर्माण में भी उन मूल्यों और सिद्धान्तों को उन्होंने कायम

(श्री शिवचरण माथुर)

रखा। आज हमारे देश से वह पीढ़ी धीरे-धीरे उठती जा रही है। हमें यह सोचना है कि जिस पीढ़ी ने आजादी के संघर्ष में भूमिका निभाई, कुछ परम्पराएं कायम कीं और आजादी के बाद देश को नई दिशा देने की कल्पना की, हम उनके पद-चिन्हों पर चलकर भारत के लिए एक नया और सुन्दर बनाने की चेष्टा करें।

मेरा उनका बहुत निकट का सम्बन्ध था। वात्सल्यमय भावना से हमेशा बात किया करते थे। उन्होंने एक परिवार जन की तरह से हमेशा सम्बन्ध रखा था। मैं यह मानता हूं कि उनके चले जाने से उनके परिवार को तो सीधी क्षति हुई है लेकिन हम सब लोगों को एक बहुत गहरा धक्का लगा है। उनके हमारे बीच में से चले जाने से जो कमी हुई है इस कमी को पूरा करना मुझे तो असम्भव लगता है।

इस मौके पर हम प्रभु से यही निवेदन कर सकते हैं, यही प्रार्थना कर सकते हैं कि जो भी जीवन उन्होंने जिया उसके आधार पर उनको स्वर्ग में स्थान मिले, उनकी आत्मा को शान्ति मिले और उनके परिवार वालों, जिसमें हम सब लोग शामिल हैं, के इस दारुण दुःख को सहने की शक्ति दे। इसी प्रार्थना के साथ मैं शोभाराम जी के प्रति अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

**श्री भैरोंसिंह शेखावत (नेता प्रतिपक्ष) :** अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्य मन्त्री जी ने जो शोक प्रस्ताव रखा है मैं भी उस प्रस्ताव में अपने आपको शामिल करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, जिसे व्यक्ति ने जन्म लिया है उसकी मृत्यु भी निश्चित है। लेकिन कोई व्यक्ति अपने कर्त्तव्य का निर्वहन करते हुए यदि मृत्यु को प्राप्त करता है तो सारा संसार उसके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करता है, उसको पीढ़ियां याद करती हैं।

शोभाराम जी इस सदन के सदस्य थे। लेकिन आज की कार्य-सूची उठाकर देखें तो आज का दिन शोभाराम जी के लिए ही निश्चित था। वह सौभाग्यशाली थे. जो कार्य को करते हुए मृत्यु को प्राप्त हो गये। आज की बिजनेस लिस्ट में जहां प्राइवेट मैम्बर्स का बिजनेस है वहां लिखा हुआ है, "श्री शोभाराम, प्रभारी सदस्य, प्रस्ताव करेंगे कि निम्नांकित विधेयक को विचारार्थ लिया जाय"। दूसरा प्रस्ताव भी उनका है—"श्री शोभाराम, प्रभारी सदस्य, प्रस्ताव करेंगे कि निम्नांकित विधेयक को विचारार्थ लिया जाय।" इसका तात्पर्य सीधा यह निकलता है कि इस व्यक्ति ने अपनी मृत्यु तक अपने कर्तव्य के निर्वहन के उत्तरदायित्व को नहीं छोड़ा।

श्री शोभाराम जी इस विधान सभा के सदस्य तो रहे ही हैं लेकिन अध्यक्ष महोदय, जहां तक मेरी स्मरण शक्ति है, मैं कह सकता हूं कि राज्यों के एकीकरण की भूमिका में सरदार पटेल ने जो योजना बनाई थी, उस योजना के अनुसार चाहे गुजरात में, उड़ीसा में और बिहार में

(श्री भैरोंसिंह शेखावत)

कुछ रियासतों का एकीकरण हुआ। लेकिन जहां तक मेरी स्मरण शक्ति है, यह उस एकीकरण योजना की प्रथम इकाई के प्रधान मन्त्री बने। जिस समय मत्स्य के मुख्य मन्त्री बने, लोगों को इस राजस्थान की कल्पना नहीं थी, जिस राजस्थान का नक्शा आज हमारे सामने है। वह नक्शा, जिस समय शोभाराम जी मुख्य मन्त्री बने थे, उस समय नहीं था। सरदार पटेल के दिमाग में यह नक्शा था लेकिन उसका श्रीगणेश शोभाराम जी के नाम पर मत्स्य प्रदेश के नाम से हुआ। जो राजस्थान आज बना है राजस्थान का आज जो सारा नक्शा है इस नक्शे को बनाने में शोभाराम जी की भूमिका रही है। राजस्थान का कोई व्यक्ति, उस व्यक्ति, जिसने इसकी भूमिका बनायी हो, का उऋण नहीं हो सकता।

शोभाराम जी के सम्बन्ध में, अध्यक्ष महोदय, क्या कहा जाय और क्या नहीं कहा जाय, आज के चार दिन पहले मैं उनसे हास्पिटल में मिला, उनकी जैसी आदत थी, बोलना उन्होंने चालू किया। डॉक्टर ने मना किया, मैंने भी मना किया किन्तु माने नहीं, बोलते रहे, उनकी शिकायत यह थी कि मुझे इन्टेंसिव केयर यूनिट में क्यों रखा, मुझे नीचे कॉटेज वार्ड में क्यों नहीं ले जाते, मैं ज्यादा अस्वस्थ नहीं हूं, और यहां तक कह गये कि मेरा कुछ नहीं होने वाला है। हम सब परेशान थे कि उन्हें कॉटेज वार्ड में कैसे रखा जाय। वह ज्यादा बोलने लगे, तो डॉक्टर साहब ने कहा; यह तो आपकी बात मानेंगे नहीं, आप मेरी बात मानकर यहां से चले जाइये। तब जाकर उन्होंने बोलना बन्द किया। मैं चला आया।

अध्यक्ष महोदय, आजन्म शोभाराम जी मृदुभाषी रहे, कई लोगों को क्रोध आता है, कई बार कृत्रिम क्रोध भी करना पड़ता है, लेकिन उस व्यक्ति को नजदीक से जिसने देखा वह जानते हैं, वाणी से उन्होंने कभी क्रोध प्रकट नहीं किया। व्यवहार में तो इन्सान हैं, क्रोध भी आयेगा, स्नेह भी आवेगा। अलग-अलग अवसर आते हैं। लेकिन वाणी से उस व्यक्ति ने क्रोध प्रकट नहीं किया, यह उस व्यक्ति की बहुत बड़ी महानता है।

अध्यक्ष महोदय, मुझे तो इस बात की खुशी है कि शोभाराम जी जैसा व्यक्ति कहां से चलकर कहां तक पहुंचा। आखिर लोकतन्त्र की देन क्या है ? वह गरीब घर में पैदा होने वाले, बैकवर्ड क्लास के व्यक्ति थे, जिनके मां-बाप ने कभी कल्पना नहीं की होगी कि हमारा बेटा अपना परम्परागत व्यवसाय छोड़कर कभी वकील बनेगा, मत्स्य का मुख्य मन्त्री बनेगा, राजस्थान के मन्त्रिमण्डल का सदस्य बनेगा, और उच्च पद पर पहुचेगा। लोकतन्त्र के प्रति लोगों की आस्था का निर्माण करने वाले किसी व्यक्ति से प्रेरणा ले सकते है तो शोभाराम जी के जीवन से ले सकते हैं, गरीब घर में पैदा होकर वह कहां तक पहुचे। आखिर लोकतान्त्रिक व्यवस्था के यही तो कुछ मूल्य हैं, जिन मूल्यों से प्रभावित होकर इस व्यवस्था में लोग अपनी

(श्री भैरोंसिंह शेखावत)

आस्था प्रकट करते हैं। इसी आस्था की उपलब्धि शोभाराम जी थे।

शोभाराम जी ने जिस प्रकार काम किया शासन में, अध्यक्ष महोदय, विधान सभा में कई बार ऐसे प्रसंग आ जाते हैं कि आपस में उत्तेजना पैदा हो जाती है, लेकिन जहां तक मेरी जानकारी है; मुझे याद है, उस व्यक्ति को कभी मैंने उत्तेजित होते हुए नहीं देखा। अगर किसी दूसरे में उत्तेजना आ गई और शोभाराम जी से पाला पड़ गया तो जो उत्तेजना ला रहा है वह शिथिल हो जाता था। यह भी एक कला है, एक व्यवहार-कुशलता है; मन की शुद्धता है, इनका प्रभाव किसी अगले व्यक्ति पर पड़ता है तो निश्चित रूप से उसकी छाप उसके ऊपर भी पड़ती है। शोभाराम जी हमारी इस विधान सभा में और विधान सभा के बाहर प्रगतिशील नीतियों के प्रतीक रहे हैं। मुझे याद है, भूतपूर्व मुख्य मन्त्री श्री मोहन लाल जी सुखाड़िया के समय में गंगानगर में भूमि आवंटन के सम्बन्ध में कुछ अनियमिततायें हुई थीं। नियमों में किस प्रकार का सुधार किया जाए, विधान सभा में इसके बारे में सुझाव देने की मांग की गई, समिति का गठन किया गया, उस समिति के वे कई दिनों तक कन्वीनर रहे या चेयरमैन रहे; उस समिति के सामने कई लोगों ने साक्ष्य दिये। जो व्यक्ति साक्ष्य देने गए उन्होंने मुझे आकर बताया, अलवर का रहने वाला व्यक्ति गंगानगर की समस्याओं को क्या समझेगा, इस दृष्टि से हम साक्ष्य देने गये किन्तु आने के बाद महसूस करके चलते हैं कि हमने गंगानगर में कोलोनाइजेशन के सम्बन्ध में, आवंटन के सम्बन्ध में अब तक जितनी जानकारी प्राप्त की थी वह शोभाराम जी के सामने बिल्कुल नगण्य थी। इस प्रकार की तैयारी से वह कमेटी के अन्दर बैठे और सब कुछ काम किया।

अध्यक्ष महोदय, इस प्रकार का व्यक्ति हमारे बीच से अचानक उठ जाय तो हमें निश्चित रूप से दुःखी होना पड़ेगा।

जैसा मुख्य मन्त्री जी ने कहा, जिन लोगों ने आजादी के आन्दोलन में संघर्ष किया, अपनी सब कुछ कुर्बानियां दीं, वह पीढ़ी धीरे-धीरे समाप्त होती जा रही है। यह भी, अध्यक्ष महोदय, उस पीढ़ी के सदस्य थे। स्वर्गीय जयनारायण जी व्यास, स्वर्गीय माणिक्य लाल जी वर्मा और स्वर्गीय हीरालाल जी शास्त्री जैसे पुरुषों की पीढ़ी में शोभाराम जी का कण्ट्रीब्यूशन भी कम नहीं था। वह उस पीढ़ी के सदस्य थे। मैं तो ऐसा समझता हूं कि राजस्थान की उस पीढ़ी, जिसने राजस्थान की सेवा की है, राजस्थान को बचाने में भूमिका निभाई है, देश को आजाद कराने में अपना बलिदान दिया है, त्याग-तपस्या की है, सेवाओं को राजस्थान ही नहीं हिन्दुस्तान भूल नहीं सकता। जन्म-जन्मान्तर, जन्म-जन्म तक उन्हें लोगों को याद करना पड़ेगा। इस प्रकार का व्यक्ति हमारे बीच से उठकर चला जाए इसका हमें बहुत दुःख है।

भगवान से यही प्रार्थना करता हूं कि वह उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे; साथ ही शोक संतप्त परिवार, जिसको उनकी असामयिक मृत्यु से वेदना हुई है, इस दुःख को सहन कर सके, इस प्रकार की

(6)



(श्री भैरोंसिंह शेखावत)

शक्ति उसे प्रदान करे।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं आज स्वर्गीय शोभाराम जी, जिन्हें कल स्वर्गीय नहीं कह सकता था, के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

**श्री राजबहादुर** (भरतपुर): अध्यक्ष महोदय, इसी सदन में हमारे साथ बैठने वाले, कल तक हमारे साथ बैठने वाले, हमारे प्यारे, हमारे मित्र, हमारे साथी शोभाराम जी आज हमारे बीच नहीं रहे। मुझ जैसे व्यक्ति को लगता है, जैसे कोई बोल्ट फ्रॉम दी ब्ल्यू हो गया हो। मेरा-उनका बहुत पुराना लम्बा साथ रहा है। हम पड़ौसी थे हमारे आंदोलन साथ-साथ चले। हमें एक ओर प्रेरणा मिलती थी राजस्थान के नेताओं से, दूसरी ओर हमें समर्थन मिलता था, आगरे, मथुरा में जो कांग्रेस के बड़े-बड़े नेता थे, उनसे हम साथ साथ चलते थे। आन्दोलन में भी साथ साथ चलते थे।

आज, मुझे ऐसा लगता है, हमारे जीवन में एक और रिक्त स्थान हो गया है। जितने दिनों का जीवन शेष है, उसमें शोभाराम जी, और शोभाराम जी के साथ उन सारे लोगों, जिनके साथ काम करने का, जिनके चरणों में बैठने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ, पिछली पंक्तियों में बैठकर भी जिनका सहयोग मिला, उनको याद करता रहूं। मुझे तो बहुत ही क्षोभ है, हार्दिक शोक है।

शोभाराम जी के गुणों के बारे में मैं अधिक नहीं कहकर जो कुछ भी तथ्य और भावनायें सदन के नेता और सदन के विपक्ष के नेता महोदय ने व्यक्त की हैं उनमें अपने आपको सम्मिलित करता हूं किन्तु एक-दो बातें याद आती है।

जब हमारी मत्स्य यूनियन का एकीकरण हो रहा था, हम सब से पूछा गया था, मैं कोई भिन्न बात नहीं कहना चाहता, किन्तु जहां तक मुझे याद है पहला संगठन जो रियासतों का बना वह उड़ीसा स्टेट का बना था, सरनणधरा जी उस स्टेट के मुख्य मन्त्री बने थे। दूसरा हमारा मत्स्य यूनियन्स था। किन्तु पहले मत्स्य यूनियन बना हो, चाहे उड़ीसा स्टेट बनी हो, उसके बाद पेप्सू बना हो, चाहे गुजरात स्टेट बनी हो, सवाल यह था कि उस पीढ़ी, जिसमें कि ट्वी लाइट ऑफ चेन्ज था, प्रभात हो रहा था, रात्रि का अन्धेरा जा रहा था, वह उन नक्षत्रों में थे जिनसे बहुत प्रकाश मिला। ऐसी चुनौतियां और ऐसी कठिन समस्यायें सामने थीं। खास तौर से मत्स्य में, आपको मालूम है, काफी दंगे हुये थे, काफी नर-संहार हुआ था, काफी लोग विस्थापित हुये थे, उधर से विस्थापित हुए थे। पाकिस्तान से जो लोग आये थे उनका भी बाहुल्य, उनकी सारी बाढ़ मत्स्य यूनियन पर आकर पड़ी थी। बहुत से लोग आये, उन दुखी लोगों को, पिछड़े लोगों को कैसे सांत्वना दी जाए इस कार्य का सारा, प्रथमतः भार, मत्स्य यूनियन की पहली सरकार, जिसके वे मुख्य मन्त्री थे, पर आया। मैं कह सकता हूं कि क्रम से 10-15-20 वर्ष तक वह काम चला। शोभाराम जी बराबर उसमें सम्मिलित रहे। एक-दो बार तो मुझे भी सौभाग्य मिला उनके साथ जाने का, पंडित जी

(श्री राजबहादुर)

से मिलने का, प्रधानमन्त्री जी से मिलने का। सुविधायें और मुआवजा उधर से आने वालों को देने जो यहां पर विस्थापित हुए थे, उनको बसाने, उनको जमीन देने जो उनकी समस्यायें थीं उन सभी को सुलझाने में उनका बहुत ही बड़ा योगदान रहा। पंडित जी का नेतृत्व था, पंडित जी की सहानुभूति हमें मिली थी, लेकिन वह बहुत कठिन काम था। 17 मार्च सन् 1948 के दरमियान मत्स्य यूनियन बनी तब से लेकर 30 मार्च, 1949; जब पहला राजस्थान बना। जिसमें अन्य लोग शामिल हुए, के बीच का कठिनतम पीरियड था। उसके बाद तो रिहेबिलिटेशन मिनिस्ट्री बनती रही लेकिन फेक्ट यह है कि उनमें बड़ी सूझ-बूझ थी।

यह दर्शाता है कि आदमी का जन्म कहां होता है, किस परिवार में होता है, पिछड़ी जाति का है या अग्रणी जाति का है, बड़ी जाति का है या छोटी जाति का है इससे कुछ नहीं होता है। आदमी के संस्कार होते है, व्यक्तिगत संस्कार होते हैं व्यक्ति की खुद की योग्यता होती है, व्यक्ति की खुद की मेधा होती है। उस मेधा, संस्कार और योग्यता का आधार या तो स्वयं की आत्मा होती है या फिर भगवान की दी हुई चीज होती है। सफलता और असफलता के बीच में एक विचार का अन्तर है। विचार ठीक हो तो सफलता है और विचार ठीक नहीं है तो असफलता है। यह कहना पड़ेगा कि आज जो यह जात-पांत के झगड़े चलते हैं, उन्होंने कभी जाति का जिक्र किया ही नहीं, उनके मुंह से जाति का नाम सुना ही नहीं कि मैं कौनसी जाति का हूं, क्या हूं। हम सब जानते हैं कि वह पिछड़ी जाति के थे जिसमें शिक्षा, साक्षरता बिल्कुल नगण्य मात्र थी लेकिन योग्य से योग्य, हम में से बड़े से बड़े मेधावी और बड़े से बड़े विचारवान, अनुभवी और प्रशासक व्यक्ति के कन्धे से कंधा मिलाकर वह चल सकते थे। मैं कह सकता हूं कि यह एक देन मिली है हमारे राजस्थान को भी और हमारे देश को भी, और उस पंक्ति से मिली है जिसने आजादी की लड़ाई लड़ी थी। बड़ी मुश्किल से एक पीढ़ी तैयार होती है किन्तु वह पीढ़ी तैयार हुई। मैं तो आज भगवान से यह प्रार्थना करता हूं कि उस पीढ़ी से आज की पीढ़ी और आने वाली पीढ़ियां प्रेरणा लें, स्फूर्ति, मार्गदर्शन प्राप्त करें। वे लोग दैदीप्यमान स्तम्भ की तरह से हमारे मार्ग में हमेशा चमकते रहेंगे ताकि जो हमारे बीच में नहीं रहे इनकी धरोहर को हम संभाल सकें। धरोहर है देश की आजादी, देश की एकता, देश का एकत्व, देश की इन्टेग्रिटी, देश की सावरनिटी, इस धरोहर को सम्भालने के लिए हमें सब चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए जिनसे प्रेरणा मिल सकेगी, ऐसे थे हमारे शोभाराम जी।

शोभाराम जी से मेरा व्यक्तिगत बहुत स्नेह था, बहुत सम्बन्ध था। सच कहता हूं कि उनके बिछोह से बहुत क्लेश और बहुत दुःख अनुभव होता है लेकिन मैं इतना ही कहना चाहता हूं कि ईश्वर जो भी मुझे क्षण दे, जो मेरे जीवन के शेष क्षण रहे हैं उनमें मैं उनके बताये कार्यों जिनमें उनका

(श्री राजबहादुर)

बड़ा योगदान रहा, को पूरा कर सकूं, निभा सकूं, आगे बढ़ा सकूं तो अपने को धन्य मानूंगा।

आज अश्रुपूर्ण नेत्रों और एक दुःखी हृदय से अपने प्यारे मित्र, सदा प्यारे साथी, प्रिय शोभाराम जी की आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

**श्री कमलेन्द्रसिंह** (जनता जे.पी) : माननीय अध्यक्ष महोदय, सदन के नेता ने जो शोक-प्रस्ताव सदन के सामने पेश किया है उसमें अपनी पार्टी के सभी सदस्यों की भावना और मेरी भावना सम्मिलित करना चाहता हूं।

अध्यक्ष महोदय, आजादी की लड़ाई में अग्रिम पंक्ति में रहने वाले एक और प्रहरी को आज हमको श्रद्धांजलि अर्पित करनी पड़ रही है।

मत्स्य यूनियन के चीफ मिनिस्टर वह रहे और जो राजस्थान का निर्माण हुआ है उसके प्रथम चरण में उनका योगदान रहा। राजस्थान की जो राजनीति है, राजनीतिक नक्शा बना है उसमें हर वक्त वह अग्रणी रहे हैं और आज दिन तक अग्रिम पंक्ति में रहे। कहीं भी काम पड़ता, या किसी को भी राय लेने की आवश्यकता पड़ती तो शोभाराम जी आगे आते और उनके एक्सपीरियन्स का लाभ हम सबको मिलता।

अध्यक्ष महोदय, मैं उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए ईश्वर से प्रार्थना करूंगा कि उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

**श्री यदुनाथसिंह** (लोकदल-चरणसिंह) : अध्यक्ष महोदय, सदन के नेता, विरोधी दल के नेता, बाबूजी और राव साहब ने शोभाराम जी के हमारे बीच से उठ जाने के सम्बन्ध में शोक-प्रस्ताव रखा है उसमें मैं अपने आपको और अपने दल को सम्मिलित करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, शोभाराम जी हमारे बिल्कुल निकट पड़ोसी थे। बचपन से ही हमारा उनका सम्पर्क रहा। शोभाराम जी के बारे में, उनके समाज के बारे में, राज्य-निर्माण के बारे में जो कुछ भी माननीय नेताओं ने कहा है उसके अलावा मैं तो इतना ही कहना चाहूंगा कि उनकी समाज के निर्माण में जो भूमिका रही है। उसको शब्दों में व्यक्त कर पाना सम्भव नहीं है वह महसूस करने की चीज है। अध्यक्ष महोदय, शोभाराम जी के सम्पर्क में जो भी आया वह स्वयं उनके बारे में यह महसूस करेगा। अध्यक्ष महोदय, मैंने तो उन्हें हमेशा गुरु के रूप में लिया है। फाइनेन्स का सवाल हो, चाहे को-ऑपरेटिव का सवाल हो मैंने उनसे बढ़िया अध्यापक अपने जीवन में नहीं पाया। उनको बड़ी खुशी होती थी जब कभी कोई विषय पर उनसे बात करते थे। सब विषयों में उनकी पैठ थी, कोई कन्फ्यूजन उनके दिमाग में नहीं था। उस रूप में मैंने उनसे प्रेरणा ली है।

उनके बारे में ज्यादा न कहते हुए; अध्यक्ष महोदय, यही कहना चाहूंगा कि

(श्री यदुनाथसिंह)

बचपन से बच्चे जैसा प्यार मुझे तो उन्होंने दिया है। उनका हमारे बीच से उठ जाने से मुझे व्यक्तिगत तौर पर, राजस्थान को, इस देश को, दुःख महसूस हुआ है। समाज का निर्माण करने वाली एक पीढ़ी के कुछ लोगों में से वह थे।

अध्यक्ष महोदय, उनके निधन से पूरे सदन और सदन के बाहर लोगों को दुःख हुआ है। आज जब मैं घर से निकला तो उनके निधन की आम चर्चा थी। अध्यक्ष महोदय, जो भी सदन की परिपाटी रही है, मैं तो सदन में पहली बार आया हूं लेकिन यही कहना चाहता हूं कि उनके निधन पर सदन की आज की कार्यवाही को स्थगित करें क्योंकि सबके भारी मन हैं, किसी का यहां पर बैठकर किसी कार्यवाही में भाग लेना सम्भव नहीं है।

यह कहते हुए उनके शोक संतप्त परिवारजन को, समाज को उनके आकस्मिक निधन से जो आघात पहुंचा है उसको सहन करने की भगवान शक्ति दे और आने वाली पीढ़ियां उनसे प्रेरणा लें।

**श्री मेघराज तावड़ ( माकपा ) :** माननीय अध्यक्ष महोदय, सदन के नेता, विरोधी पक्ष के नेता और विभिन्न दलों के नेताओं ने इस सदन की महान् आत्मा माननीय शोभाराम जी के प्रति जो शोक प्रस्ताव प्रस्तुत किया है, मैं अपने और अपने दल को उसमें सम्मिलित करता हूं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, यह बात तो सही है कि जिन्दगी में हम आए हैं तो हमको जाना ही है, स्थायी रहने वाला कोई नहीं है। लेकिन, अध्यक्ष महोदय, समाज को, दुनिया को उसकी जो देन रही वह बहुत बड़ी चीज है। मैं ज्यादा नहीं कहना चाहता हूं। ऐसे व्यक्ति के बारे में जो कुछ भी कहा जाय, कम है। लेकिन उन्होंने जो कुछ किया, व्यक्तिगत रूप से समाज को, देश को जो प्रेरणा दी इसके लिए जो कुछ किया उसको हम अपनी जिन्दगी में उतारें और देश को उन्होंने जो प्रेरणा दी है उसको सही मायने में कायम रखें। यह और भी बड़े दुःख का समय है, अध्यक्ष महोदय, जो देश की आजादी के लिए लड़े, जिन लोगों ने आजादी क्या है, किस तरह से प्राप्त की जा सकी है और उसको सुरक्षित आजादी के लिए कुर्बानी दी, जिन्होंने आजादी प्राप्त करने के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया हम आज उस आजादी का सुख भोग रहे हैं। पीछे की जो पीढ़ी है आज हम उससे वह प्रेरणा नहीं लें कि आजादी रखने का हमारा क्या दायित्व है तो, अध्यक्ष महोदय, आने वाली पीढ़ी प्रेरणा नहीं लेगी और यह महसूस नहीं कर पायेगी कि हमने किस तरह से आजादी प्राप्त की है, उसके लिए किस तरह से दुःख झेला, लोगों ने कैसे कुर्बानी की। हमारे जिन-जिन नेताओं, जिन-जिन स्वर्गीय लोगों ने जो हमको कुछ दिया है, जिन्होंने आजादी प्राप्त करके दी है हमारी उस पीछे की पीढ़ी से प्रेरणा लेना और देश की आजादी

(श्री मेघराज तावड़)

की रक्षा करना ही हमारा प्रथम कर्तव्य है। हम क्रांति में भाग लेने वाली, आजादी के संघर्ष में भाग लेने वाली उस महान आत्मा को सही श्रद्धान्जलि तभी दे पायेंगे जब हम उनकी प्रेरणा के अनुसार चलें, उनके पदचिन्हों पर चलें, उनके बताये हुए मार्ग पर चलें, और भ्रष्टाचार, अपने स्वार्थ को छोड़ कर के, उससे परे उठ कर के देश की आजादी की रक्षा करने के लिए समाज की रक्षा करने के लिए जो कुछ उन्होंने बताया उन पर चलें तो वही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

अध्यक्ष महोदय, मुझे ऐसे व्यक्ति के उठ जाने का काफी दुःख है क्योंकि एकाध बार मैं व्यक्तिगत तौर से उनसे मिला था। क्योंकि मैं पहली बार आया हूं किन्तु उनसे जब भी कभी मिलना हुआ तो लगा कि वह मधुर-भाषी थे और इस तरह का उनका प्रेम था, व्यवहार था कि उससे कोई भी आदमी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता उनका हमारे बीच में से इस समय पर उठ जाना हमारे लिए और हमारे सदन के लिए, देश के लिए, राजस्थान की जनता के लिये बड़ा दुःख का विषय है। ऐसा व्यक्ति हमको प्राप्त नहीं हो सकता।

मैं उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

**श्री अध्यक्ष :** सदन के नेता महोदय, विपक्ष के नेता और अलग-अलग दलों के नेताओं ने जो स्वर्गीय श्री शोभाराम जी को श्रद्धांजलियां अर्पित की हैं। उनमें मैं अपने आपको सम्मिलित करता हूं।

शोभाराम जी जैसा नाम, शोभा, वैसे ही गुण वाले व्यक्ति थे। अच्छे प्रशासक थे, देशभक्त थे, स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी थे मेहनत बड़ी करने वाले थे, समाज सुधारक थे। यह सब उनमें था की लेकिन आज व्यक्ति हमारे बीच रह रहे नहीं उनके जो गुण हैं उनमें हम कुछ आगे के लिऐ सबक ले सकते हैं।

शोभाराम जी साहब से करीब तीस-पैंतीस साल मेरा सम्पर्क रहा। मैं स्वयं, मेरे बहुत से साथी, सदन के बहुत से माननीय सदस्य भी पिछड़े वर्ग से आते हैं। मुझे वह वक्त याद है जब पिछड़े वर्ग का व्यक्ति राजस्थान के एकीकरण की जो प्रक्रिया शुरू हुई थी, उसमें प्रथम बार मुख्य मंत्री बना था। वह एक तरह से शुरूआत थी आधुनिक राजस्थान की। यह कहना भी कोई गलत बात नहीं होगी कि पांच-दस लोग जो राजस्थान के निर्माता कहे जा सकते हैं, में से एक स्वर्गीय शोभाराम जी थे। उनके चरित्र का सबसे बड़ा गुण यह था कि जिस काम को वह अपने हाथ में ले लेते उसको पूरी लगन और मेहनत से करते थे। यह हम लोगों के लिये एक बहुत बड़ा सबक है।

विपक्ष के नेता महोदय ने गंगानगर की भूमि अलाटमेंट की बात कही। सहकारिता के क्षेत्र में सुधार लाने के लिए जो एक समिति बनी थी उसमें भी सदस्य था। हमारी जनलेखा समिति के भी वे अध्यक्ष थे, कई दफा मंत्री रहे और कई विभागों के

(श्री अध्यक्ष)

मन्त्री रहे । जब कभी वे किसी कार्य में लगे होते, चाहे भूमि सुधार वाला मामला हो, चाहे सहकारिता वाला मामला हो, चाहे किसो मंत्री की हैसियत से हो, उस के बाद चाहे शादी हो, ब्याह हो, कोई अवसर हो, कोई व्यक्ति निजी व्यक्ति, नजदीकी व्यक्ति से मिलता तो हमेशा हमेशा उसके बारे में वे पूछते रहते थे, रात दिन उसी के काम में लगे रहते थे। यह उनके चरित्र का बड़ा गुण था ।

जब हमारे विधान सभा का यह सत्र प्रारम्भ हुआ, दो-तीन दफे मेरे वेश्म में पधारे और जो उनके विषय लिये जाने को थे, गैर सरकारी दिवस पर उसके सम्बन्ध में बड़े उत्सुक थे, पिछले सत्र में भी और इस सत्र में खास तौर से कि ये विषय लिये जाने हैं। मुझे उस दिन कुछ उनमें कमजोरी लगी इसलिए मैंने कहा, आप इस सम्बन्ध में इतनी चिन्ता न किया करें जो मेरे जिम्मे काम है वह काम आप मेरे पर छोड़ दिया करें या किसी के साथ सन्देश यहां भेज दिया करें। तो कहा, नहीं मैं चला आया । मैं चाहता हूं कि यह विषय जल्दी से जल्दी लिया जाय। इसी तरह से, आप जानते हैं, आप और हम सब राजनीति के क्षेत्र में काम करते हैं, कुछ और छोटे पदों पर भी काम करते हैं और राजनीति की जिंदगी है, काफी संघर्ष मय जिन्दगी है, इसमें उतार-चढ़ाव भी आते रहते हैं और आरोप-प्रत्यारोप भी लगते रहते हैं, कभी सच्चे होते हैं कभी झूठे होते हैं। तो, राजनीतिज्ञ के लिए बड़ा कठिन हो जाता है अपना दामन स्वच्छ रखना । लेकिन हम सबको गर्व होगा इस बात से कि हमारे में से एक व्यक्ति ऐसा था जिसने लम्बी उम्र पाई, लम्बे समय तक बड़े-बड़े पदों के ऊपर काम किया और आखिरी समय में वह हमारे बीच में से साफ दामन लेकर के गया । यह हम सबके लिए एक सीखने की बात है, हमारे मन में एक उतारने की बात है। जिन उद्देश्यों से वह प्रेरित थे उन्हीं उद्देश्यों से हमको प्रेरित रहना चाहिए और जहां तक हो सके हम निष्कलंक रहें, राजनीति में रहते हुए भी, कीचड़ में रहते हुए भी कमल की तरह रहें, यह दूसरी बड़ी बात है ।

शोभाराम जी का जीवन बड़ा संघर्ष मय जीवन रहा और कई उतार-चढ़ाव आये छोटे परिवार में, पिछड़े वर्ग में जन्म लेकर उच्च से उच्च पदों पर गये लेकिन शोभारामजी साहब के दिमाग में कभी छोटे या बड़े वाली बात नहीं आई जिन उद्देश्यों से वह प्रेरित हुए थे अपने शैशव काल में. उन्हीं उद्देश्यों की प्राप्ति में वह लगे हुए रहे । इस तरह के व्यक्ति का हमारे बीच में से उठ जाना हम सबके लिए वास्तव में बड़े दुःख का विषय है । उनके जाने से जो रिक्तता पैदा हुई उसकी पूर्ति होना बहुत ही कठिन होगा ।

परमपिता परमात्मा से मेरी यही प्रार्थना है कि वह हमारे दिवंगत नेता को चिरशान्ति प्रदान करे, उनके परिवारजन, वह एक वयोवृद्ध राजनीतिज्ञ थे, राजस्थान के निर्माताओं में से थे इसलिए एक तरह से हम भी उनके परिवार के सदस्य हैं, हम सबको इस महान् दुःख को झेलने

(श्री अध्यक्ष)

की शक्ति प्रदान करे ।

मैं माननीय सदस्यों से निवेदन करूंगा कि दो मिनट तक मौन खड़े रह कर दिवंगत नेता को श्रद्धांजलि अर्पित करें ।

(सदन ने दो मिनट मौन खड़े रह कर दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की)

कृपया स्थान ग्रहण कीजिए ।

सदन की कार्यवाही सोमवार दिनांक 26 मार्च, 1984 के प्रात: 11 बजे तक के लिये स्थगित की जाती है ।

(तदनन्तर सदन की कार्यवाही मध्यान्ह पूर्व 11.41 बजे, सोमवार दिनांक 26 मार्च, 1984 के म. पू. 11.00 बजे तक के लिये स्थगित हुई)